हस्तशिल्पों की धरोहर

एन.सी.ई.आर.टी.*

'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005' के विकास की प्रक्रिया के दौरान गठित 21 राष्ट्रीय फोकस समूहों ने स्कूली शिक्षा से जुड़े विविध मुद्दों जैसे—पाठ्यचर्या क्षेत्र, राष्ट्रीय चिंताएँ तथा व्यवस्थागत सुधारों पर विस्तार से चर्चा करते हुए आधार-पत्र लिखें। उन आधार-पत्रों में दी गई चर्चाओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की गई। एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से समय-समय पर की जाने वाली बैठकों, गोष्ठियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उन आधार-पत्रों पर चर्चा की जाती रही है। *भारतीय आधुनिक शिक्षा* के माध्यम से भी उन चर्चाओं को पाठकों तक पहुँचाने के प्रयास किये गए हैं। इस अँक में 'हस्तशिल्पों की धरोहर' नामक आधार-पत्र में दी गई पाठ्यसामग्री को शामिल किया गया है। यह आधार-पत्र इन मुद्दों की विश्लेषणात्मक चर्चा प्रस्तुत करता है कि क्यों भारतीय हस्तशिल्पों की धरोहर को स्कूली पाठ्यचर्या में शामिल किया जाए? उसके लिए हमें स्कूलों में किस प्रकार के बुनियादी ढाँचे व संसाधनों की आवश्यकता होगी, शिक्षक को इसके लिए कैसे तैयार किया जाए तथा बच्चों का मूल्याँकन इस क्षेत्र में कैसे किया जाए।

'सीखना एक संघटित घटना है। यह पृथक् प्रक्रिया नहीं है।' — *(के. जीनान, डिजाइनर एवं शिल्प शिक्षक।)*

1. कुछ संतुलित तथ्य जो पृष्ठभूमि तैयार करते हैं और हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं

- विश्व की जनसँख्या का 16% भारत में है।
- भारत में सकल राष्ट्रीय उत्पाद (ग्रॉस नेशनल प्रोडक्ट-जी.एन.पी.) का 3.8% खर्च शिक्षा पर होता है तथा 15 वर्ष से ऊपर के आयुवर्ग की 46% जनसँख्या निरक्षर है।
- चूँकि भारत में ज़्यादातर जनसँख्या वृद्धि न्यूनतम पढ़े-लिखे और कम दक्ष लोगों में ही हो रही है, इसलिए ऐसी संभावना है कि

* राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, *हस्तशिल्पों की धरोहर* राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र से लिए गए चुनिन्दा अँश, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली (अप्रैल 2009).

रोज़गार बाज़ार में प्रवेश के समय भारत में या तो निरक्षर लोगों की या अल्प शिक्षित युवाओं और बच्चों की बाढ़ होगी।

- देश में 3880 लाख बच्चे 15 वर्ष से कम उम्र के हैं। भारत शिक्षा के मोर्चे पर बड़ी चुनौती का सामना कर रहा है।
- भारत में 54% वयस्क पढ़-लिख नहीं सकते।
- भारत में रोज़गार के क्षेत्र में हस्तशिल्पकारों का स्थान कृषि के बाद दूसरा है। प्रत्येक 200 भारतीयों में से एक व्यक्ति दस्तकार है।

2. फ़ोकस समूह की व्यापक दृष्टि

आज के भारतीय युवाओं को वैश्विक एवं तेज़ी से विकास की दिशा में अग्रसर समाज की चुनौतियों का सामना करने तथा साथ ही अपनी सांस्कृतिक संपदाओं, परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित करने के योग्य बनाने के लिए एक पूर्ण एवं व्यापक शिक्षा देना।

3. फ़ोकस समूह के उद्देश्य

- शैक्षणिक प्रणाली में सैद्धांतिक रूप से एवं अभ्यास के ज़रिए हस्तशिल्प के सांस्कृतिक, सामाजिक और रचनात्मक पहलुओं को शामिल करना।
- यह सुनिश्चित करना कि हस्तशिल्प को एक पेशेवर कौशल के रूप में देखा जाए, जो रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराने में सहायक हो।

जैसा कि किसी ने कहा है—

"मुझे कुछ कहो और मैं भूल जाऊँगा। मुझे कुछ दिखाओ हो सकता है मैं याद न रखूँ। मुझे किसी कार्य में शामिल करो तो मैं उस काम को समझ जाऊँगा।'

4. कार्य विधि

भारतीयों के विषय में यह आम धारणा है कि हममें सपने देखने की असीम क्षमता है, उसे हकीकत में बदलने की तुलना में। इसलिए हमने ऐसी संस्तुतियाँ देना महत्त्वपूर्ण समझा जो व्यावहारिक, विशिष्ट एवं पहुँच के अंदर हों; जिन्हें वैयक्तिक अनुभवों, आँकड़ों और मार्गदर्शन का समर्थन प्राप्त हो और जो व्यवस्था की कमज़ोरियों के बदले शक्तियों पर आधारित हों।

5. क्यों हस्तशिल्पों की धरोहर को स्कूली पाठ्यचर्या में शामिल करना चाहिए

यह फोकस समूह पूरे भारत के हस्तशिल्प क्षेत्र से जुड़े दो करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, भौगोलिक विस्तार के रूप में ये पूरे भारत को समेटते हैं और तरह-तरह की कार्य-संरचनाओं तथा संस्कृतियों को शामिल करते हैं। जिसमें विभिन्न तकनीकों और प्रौद्योगिकियों, तरह-तरह की सामग्रियों, मिट्टी से लेकर महँगी धातुओं के साथ काम करने वाले हस्तशिल्पकार भी सम्मिलित हैं। कृषि के बाद हस्तशिल्प ही रोज़गार का सबसे बड़ा ज़रिया है। यह देश की अर्थव्यवस्था के पहलुओं—निर्यात राजस्व एवं घरेलू बिक्री में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कारकों में से एक है।

इसके अलावा हस्तशिल्प का इस्तेमाल अनेक सामाजिक मुद्दों और जीवन के तरीकों को दर्शाने के जरिए के रूप में भी किया जा सकता है। भारत में हस्तशिल्प की जड़ें इतनी गहरी हैं कि इसका इस्तेमाल सदियों से व्यापक दार्शनिक, तत्वज्ञान एवं सामाजिक अवधारणाओं के रूप में होता रहा है। अनेक शब्दों, पैमानों के रूपों, रंगों और वस्तुओं के मूल में हस्तशिल्प ही है। ज़िंदगी के '*ताने बाने*' से

हम सभी अवगत हैं। इसमें जाति, लिंग, धर्म और सामाजिक कार्य सभी की महत्त्वपूर्ण एवं अलग-अलग भूमिकाएँ हैं। जब हम रणनीति अख़्तियार करते हैं तो सभी भिन्न पहलुओं पर विचार करने की ज़रुरत होती है। *क्या बहिष्करण को जागरूकता में बदला जा सकता है?* इसका कोई व्यापक उत्तर नहीं है—हम केवल इस हस्तशिल्प क्षेत्र की विविधता एवं जटिलता की समझ विकसित करने का प्रयास कर सकते हैं। हमारे समूह का तर्क यह है कि—

> *"हस्तशिल्प–सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों रूप से–विद्यालय और समाज के सभी सैक्टर और क्षेत्रों के बच्चों के लिए भावनात्मक, आर्थिक एवं बौद्धिक सशक्तीकरण का मज़बूत माध्यम हो सकता है।"*

हस्तशिल्प एवं धरोहर जैसे शब्दों का व्यापक अर्थ है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में वे खासकर भावनाओं को जाग्रत करने वाले होते हैं। शहरी परिवेश में रहने वाले युवाओं के लिए इनके अर्थ उबाने वाले, पुरातन और अप्रासंगिक हो सकते हैं; कुछ औरों के लिए इसके मायने समृद्ध संस्कृति और परंपराओं वाली पाँच हज़ार वर्ष पुरानी सभ्यता से जुड़े हो सकते हैं। इन संस्कृतियों और परंपराओं पर हम अपना मालिकाना हक होने का दावा करते हैं और इसमें कभी भी बदलाव नहीं चाहते। कुछेक लोग तो चाहते हैं कि परंपरा की घड़ी की सूई पूर्व मुगलकालीन भारत से थोड़ा पहले ही रुक जाए जबकि कुछ का मानना है कि हस्तशिल्प न तो कभी स्थिर है और न ही इसे कभी स्थिर होना चाहिए।

यदि कोई भारतीय नागरिक अंतरिक्ष में पहुँच जाता है, सौंदर्य प्रतियोगिता में विजयी होता है या ओलंपिक में रजत पदक पाता है तो समकालीन भारतीय नागरिक बहुत उत्साही हो जाते हैं। सानिया मिर्ज़ा 100 सर्वश्रेष्ठ टेनिस खिलाड़ियों में शामिल होती हैं तो हमारी उत्सुकता बढ़ जाती है। लेकिन कुछ लोग ही ऐसे हैं जो उन लाखों उस्ताद हस्तशिल्पियों की मौजूदगी की सराहना करते हैं जिनका शेष दुनिया में कोई सानी नहीं है।

यह बात कितनी विरोधाभासी है कि जहाँ शिल्प परंपराएँ पहली बार अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में प्रवेश करने वाले ग्रामीण दस्तकारों के लिए एक अकेला और अनोखा आमदनी का जरिया है वहीं वे पिछड़ेपन और हीन भावना का भी सामना करते हैं। खासकर ऐसे समय में जब भारत उच्च प्रौद्योगिकी से युक्त औद्योगिकीकरण और वैश्वीकरण के युग में प्रवेश कर रहा है। सक्रिय कार्यकर्त्ताओं, अर्थशास्त्रियों, नौकरशाहों एवं व्यावसायिक रणनीतिकारों ने शिल्पों और डिजाइन तथा परपंरा के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सजावटी, संभ्रांतीय एवं परिधीय समझा न कि जीविकोपार्जन के धीरे-धीरे क्षीण होते जरिए के रूप में देखा। हस्तशिल्पियों को वर्तमान एवं भविष्य की अपेक्षा हमारे अतीत की तस्वीर पेश करने वाले के रूप में देखा जाता है। हम यह भूल जाते हैं कि प्रत्येक 200 भारतीयों में से एक व्यक्ति शिल्पकार है। हस्तशिल्प एक उत्पादन प्रक्रिया है। यह एक आश्चर्यजनक एवं स्वदेशी प्रौद्योगिकी का रूप है न कि प्राचीन हो चली परंपरा का। इसके कच्चे माल (बेंत, कपास, मिट्टी, लकड़ी, ऊन, सिल्क, खनिज लवण) न केवल हमारे देश में उपलब्ध हैं बल्कि ये पर्यावरण की दृष्टि से भी लाभप्रद होते हैं।

"अनोखे हस्तशिल्प कौशल, तकनीकों, डिज़ाइनों और उत्पादों के अस्तित्व भारत की ताकत हैं, जो सभी स्तरों पर कैरियर के अवसर उपलब्ध कराते हैं। यह इसकी कमज़ोरी नहीं है। विद्यालय की पाठ्यचर्या में इस बिंदु पर ज़ोर दिए जाने तथा इसे शौकिया नहीं बल्कि विशिष्टता हासिल कराने के उद्देश्य से पढ़ाए जाने की आवश्यकता है"।

"हम में से वे जो नई सहस्राब्दि पर नज़र टिकाए हैं और भारत के लिए नए दिशा निर्देश की तलाश में हैं, उनके लिए हस्तशिल्प और शिल्पकारों की क्षमता कुछ ऐसे पहलू हैं जिनके बारे में नई पीढ़ी को संवेदनशील बनाया जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में हस्तशिल्प एवं शिल्पियों की क्षमता के बारे में नई पीढ़ी को सचेत किया जाना चाहिए"।

हमें इस तथ्य को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए कि प्रत्येक दस वर्ष में हम अपने दस प्रतिशत हस्तशिल्पकारों से हाथ धो बैठते हैं।

हमारे फोकस समूह ने जिन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है उनमें से एक है—हस्तशिल्प बहुलता वाले क्षेत्रों में (जहाँ ज़्यादातर हस्तशिल्पी समुदाय के लोग हों) शिक्षा की विशिष्ट धारा को आरंभ करना। भारत में हस्तशिल्पकारों के बच्चों को ही यह चुनाव करना है कि वे या तो अनपढ़ रहते हुए अपने पूर्वजों के कौशल सीखें (इस प्रकार से काम करते हुए और पारिवारिक आय में अपना योगदान देते हुए) या फिर औपचारिक शिक्षा लें। ग्रामीण और राज्य द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के गिरते स्तर को देखते हुए कहा जा सकता है कि इस प्रकार की औपचारिक स्कूली शिक्षा उन बच्चों को भविष्य में वास्तव में जीविकोपार्जन के योग्य बनाने में सक्षम नहीं है।

हस्तशिल्प के क्षेत्र में दिए जाने वाले प्रशिक्षण को (प्रशिक्षण भले ही घर पर हो या पारंपरिक गुरु–शिष्य परंपरा के अनुरूप हो) औद्योगिक प्रशिक्षण का दर्जा दिया जाना चाहिए और इसे अन्य तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा की तरह ही सहयोग भी प्रदान किया जाना चाहिए।

"हस्तशिल्पकला को अन्य व्यावसायिक प्रशिक्षण, खासकर पारंपरिक हस्तशिल्प के क्षेत्र में, के समान दर्जा दिया जाना चाहिए और इसे एक संरचित पाठ्यचर्या का हिस्सा होना चाहिए जिसमें प्रशिक्षकों या अभिभावकों को वेतन दिया जाए न कि बच्चों को।"

पारंपरिक कौशल के साथ–साथ पारंपरिक शिक्षा के लिए भी सुविधाएँ मुहैया कराना समान रूप से महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। यह महत्त्वपूर्ण है कि हस्तशिल्प उत्पादन के मौसम को और कार्य संरचनाओं को ध्यान में रखते हुए सेमेस्टर और स्कूली कार्य घंटों का निर्धारण किया जाए, बहुत से युवा हस्तशिल्पकार स्कूल नहीं जाते क्योंकि स्कूल का समय और स्थान उनको इस तरह का अवसर नहीं दे पाते कि वे दोनों काम (पढ़ाई और पारंपरिक कौशल सीखना) साथ–साथ कर सकें। ज़्यादातर हस्तशिल्प उत्पादन मौसमी प्रक्रिया है जिसमें बाज़ार की माँग के साथ–साथ उतार–चढ़ाव आते रहते हैं। स्कूल की शर्तें और पाठ्यचर्याएँ इसके अनुसार ही होनी चाहिए।

"ऐसे क्षेत्र जहाँ हस्तशिल्प को प्रमुख गतिविधियों के रूप में शामिल किया गया है, वहाँ बच्चों

को हस्तशिल्प का चयन पाठ्यक्रम विकल्प के रूप में करने योग्य होना चाहिए।"

हस्तशिल्प को एक अपने आप में विशिष्ट धारा का रूप दिया जाना चाहिए जो बच्चों को सहायक कौशल जैसे—प्रोडक्ट डिज़ाइन, बुक कीपिंग, डिसप्ले, खरीद-फ़रोख्त करना एवं उद्यमिता कौशल सिखा सकें।

उदाहरण के लिए हस्तकरघा बुनाई क्षेत्र में जो चीज़ें पढ़ाई जानी चाहिए, वे हैं—

- उद्यमवृत्ति
- धन प्रबंधन
- संचार
- टेक्सटाइल डिज़ाइन
- ड्राफ्ट्समैनशिप (नक्शानवीसी)
- स्केल ड्राइंग
- हस्तशिल्प का इतिहास
- तकनीकी कौशल
- बुनाई के अन्य तरीके
- विभिन्न प्रकार के धागे एवं गणनाएँ
- अन्य डिज़ाइनरों, कलाकारों और हस्तशिल्पकारों से संपर्क एवं बातचीत।

शिल्पकारों को कुशल उद्यमी एवं आर्थिक सहयोगी के रूप में तैयार करने के लिए आवश्यक उपायों के बारे में हम सभी को आत्मचिंतन करना चाहिए और उन्हें कुशल उद्यमियों तथा आर्थिक भागीदारों की तरह आगे ले जाना चाहिए। हस्तशिल्प एवं हस्तशिल्पी समुदाय की कमज़ोरी ढूँढ़ने की अपेक्षा हमें उनमें जागरूकता पैदा करनी चाहिए एवं उन्हें मज़बूत बनाना चाहिए। हमें उनकी सांस्कृतिक चेतना के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। आर्थिक मामले हमारी प्रमुख आवश्यकताएँ हो सकती हैं लेकिन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक पहलुओं में हमें निर्णायक प्रक्रिया पर भी ध्यान देना चाहिए। हस्तशिल्पियों को अपने साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। हमें सुनना और बोलना दोनों ही सीखने की आवश्यकता है। बदलाव की दिशा संरक्षण से भागीदारी की तरफ़ होनी चाहिए।

बाल श्रमिक एवं हस्तशिल्प

"शिक्षुता की प्राचीन, उत्तम ढंग से नियमित व्यवस्था शिक्षा के वैकल्पिक साधन के रूप में विकसित की जा सकती है न कि दोहन करने वाली व्यवस्था के रूप में। बिना सोचे समझे बच्चों के हस्तशिल्प सीखने पर प्रतिबंध लगाने से उच्च अर्थोपार्जन करने में सक्षम कुशल कार्यबल का निर्माण करने का एकमात्र अवसर हाथ से जाता रहेगा। इससे हम वे अवसर भी खो देंगे जिनसे बढ़ती हुई बेरोज़गारी वाले इस देश में स्वरोज़गार उपलब्ध हो सकें तथा ग्रामीण युवा और विशेषकर घरेलू महिलाओं के लिए भी रोज़गार पैदा किए जा सकें। लेकिन मुझे यह भी कहना है कि कोई बच्चा जो 15 वर्ष की आयु से कम है और विद्यालय में नहीं है, वह बाल श्रमिक है। यह बहुत दु:ख की बात है कि भारत के हस्तशिल्प क्षेत्र में ज़्यादातर ऐसा होता है कि शिल्पकारों के बच्चों को ही यह चुनाव करना है कि वे या तो अनपढ़ रहते हुए अपने पूर्वजों के कौशल सीखें (इस

प्रकार से काम करते हुए और पारिवारिक आय में अपना योगदान देते हुए)। या फिर औपचारिक शिक्षा लें।

"ग्रामीण और राज्य द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के गिरते स्तर को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार की औपचारिक स्कूली शिक्षा उन बच्चों को भविष्य में वास्तव में जीविकोपार्जन के योग्य बनाने में सक्षम नहीं है। रणथंभौर का एक ग्रामीण स्कूल शिक्षक अपनी ड्यूटी पर हाज़िर होता है। दैनिक उपस्थिति रज़िस्टर में हस्ताक्षर करता है, और फिर टूरिस्ट गाइड के रूप में जंगलों में चला जाता है!"

मेरे लिए यह एक ज़रूरी चिंता है, गरीबी नहीं, जिसका उदाहरण बाल श्रम की पैरवी करते हुए दिया जाता है। परंतु क्या बच्चों के लिए वैकल्पिक शिक्षा के अवसर उपलब्ध हैं जो उन्हें उसी तरह के रोज़गार के अवसर प्रदान कर सकें। क्या बाल श्रम हस्तांतरित हो सकता है—प्रशिक्षण और सशक्तीकरण के एक गतिमान नए रूप में? मुझे यहाँ यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि मैं इस मुद्दे को आज पूर्ण रूप से शिल्प क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में देख रही हूँ, विशेषत: पारंपरिक घरेलू उद्योगों में तथा उनमें जो महिलाओं से संबंधित हैं।

शिल्प कौशलों में प्रशिक्षण, चाहे घर में हो या पारंपरिक गुरु-शिष्य संबंध के द्वारा, को औद्योगिक प्रशिक्षण के रूप में पहचाने जाने की आवश्यकता है और उसे उसी तरह का सहयोग दिए जाने की आवश्यकता है जैसा कि तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के दूसरे रूपों को दिया जाता है। परिवार, मास्टर, शिल्पकार, सहकारी समिति, संस्थान या गैर-सरकारी संस्थान जो कि प्रशिक्षण दे रहें हैं, उन्हें कुछ वृत्ति ज़रूर दी जानी चाहिए ताकि नियोक्ता के बजाय बच्चों को कुछ धन मिल सके जो इस अवधि के दौरान कमा सकते हैं। नहीं तो कौशल सिखाने के बहाने बंधक बाल श्रमिकों की परंपरा के आगे हार मान लेने का एक प्रलोभन-सा हमेशा ही रहेगा। जैसा कि उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश के कांस्य उद्योग में दिखाई देता है, जहाँ यह हस्तशिल्प पारिवारिक पेशा न रहकर एक बड़ी उद्योग गतिविधि में बदलता जा रहा है। दूसरा प्रसिद्ध उदाहरण है—कालीन उद्योग। यद्यपि अंतर्राष्ट्रीय दबाव एवं कानूनी प्रावधान के कारण कुछ बदलाव किए गए हैं। उदाहरण के लिए रगमार्क स्माईलिंग कारपेट कैंपेन, यद्यपि यह अवधारणा या अनुप्रयोग में परिशुद्ध नहीं है, आगे कार्यनीति तैयार करने में एक माड्यूल के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है।

शिल्प कौशलों को पेशेवर प्रशिक्षण के दूसरे रूपों के बराबर होना चाहिए, विशेषकर पारंपरिक हस्तशिल्प क्षेत्रों में उचित ढंग से संचारित पाठ्यचर्या का एक हिस्सा होना चाहिए। जिसमें प्रशिक्षक और अभिभावक भाग लें और उन्हें कौशलों को सिखाने के एवज में पारिश्रमिक दिया जाए न कि वे बच्चों का इस्तेमाल ऐसे मजदूर के रूप में करें जिन्हें मेहनताना नहीं दिया जाता है। इसी तरह से महत्त्वपूर्ण है—औपचारिक शिक्षा के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराने का मुद्दा तथा साथ ही पारंपरिक कौशलों को सिखाने, सेमेस्टर की योजना बनाने और कार्य संरचनाओं के अनुसार कार्य घंटे निर्धारित

करने तथा शिल्प के उत्पादन की उपयुक्ता जैसे मुद्दे भी महत्त्वपूर्ण हैं। ज़्यादातर युवा शिल्पकार विद्यालय नहीं जा पाते क्योंकि विद्यालय का समय और स्थान इस बात को असंभव कर देते हैं कि वे पढ़ाई के साथ हस्तशिल्पकारी सीख सकें। ज़्यादातर हस्तशिल्पों का उत्पादन एक सामयिक प्रक्रिया है। जिसमें बाज़ारी भावों के हिसाब से उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। विद्यालयी समय और पाठ्यचर्या को इसके अनुसार संघठित किया जा सकता है। भारत जैसे विविधता से परिपूर्ण और बहुआयामी देश में केवल एक ही हल या कार्यविधि नहीं हो सकती है।

लैला तैयबजी, चाइल्ड लेबर इन क्राफ्ट्स ट्रेडक्राफ्ट वर्कशॉप, 2003

चर्चित शिल्पकार, गणपति सतपति ने हमें चेताया है (पश्चिम बनाम भारतीय पारंपरिक संस्कृति के विषय में), "अगर हम उन्हें नहीं कहते हैं तो वे हमें कहेंगे।" हम इसी बात को उलट कर इस तरह ले सकते हैं कि अगर हम हस्तशिल्पकारों की बात नहीं सुनते हैं तो एक समय ऐसा आएगा कि वे हमारी बात सुनने के लिए हमारे बीच नहीं रहेंगे।

शालिनी आडवाणी ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा से संबंधित अनौपचारिक विचार-विमर्श समूह के सदस्य के नाते मूल्यों पर आठ सुझाव दिए जिससे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में मदद ली जा सकती है। इन सुझावों को विद्यालय के पाठ्यचर्या में हस्तशिल्प शिक्षा को शामिल करने के तर्कों के रूप में भी देखा जा सकता है—

- हस्तशिल्प को किसी व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक, भौतिक एवं मानसिक विकास को आकृति प्रदान करने का ज़रिया बनाया जा सकता है।
- यह सभी के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने का ज़रिया है।
- यह लोकतंत्र का समर्थन करता है और उसके विषय में बताता है। 1960 के राज्य नियंत्रणीय तरीके से नहीं वरन् एक ऐसे तरीके से जो व्यक्तियों तथा समुदायों के सशक्तीकरण को बढ़ावा दे।
- यह उत्पादक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने वाला होता है।
- यह टिकाऊ, विकास को बढ़ावा देने वाला है।
- यह हमारी पहचान, हमारे संबंधों, खुद को और हमारे व्यापक समूहों को, जिसमें हम जीवन बसर करते हैं, को मूल्य देना सिखाता है।
- यह हमारे समाज की विविधता को बढ़ावा देता है।
- यह उस पर्यावरण को मूल्य प्रदान करता है जिसमें हम रहते हैं।

इसी तरह के शालिनी आडवाणी के अंत:-पाठ्यचर्या कौशलों की सूची भी हमारे उस तर्क का हिस्सा बन सकी जिसमें हम विद्यालयी शिक्षा में हस्तशिल्प को शामिल करने की बात कहते हैं। ये कौशल हैं-

- विद्यार्थियों को उनके पर्यावरण के साथ संबंधों की सराहना और एक-दूसरे की परस्पर निर्भरता का कौशल।
- ***सामाजिक कौशल***—सहनशीलता, समझ एवं अपनी दुनिया को और समृद्ध करने की दिशा में असमानता का मूल्याँकन। इसमें हाशिए पर पहुँचे तथाकथित समूहों का सशक्तीकरण शामिल है।

- **सूचना प्रक्रिया कौशल** — प्रासंगिक सूचनाओं को ढूँढ़ निकालना और उन्हें संग्रहित करना, उनकी तुलना करना एवं संपूर्ण तथा आंशिक पहलुओं के संबंधों की व्याख्या करना।
- **तार्किक कौशल** — विचारों के लिए तर्क देना, व्याख्या के लिए यथार्थ भाषा का इस्तेमाल करना।
- **पूछताछ कौशल** — प्रश्न पूछना, क्रियाकलापों को योजनाबद्ध करना, विचारों में सुधार करना।
- **रचनात्मक कौशल** — अभिव्यक्ति कलाएँ, व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीके तलाशना और स्कूली परियोजनाओं तथा व्यापार में शामिल होना। उद्यमिता कौशल इस तरह की अभिवृत्ति प्रोत्साहित करते हैं जिसमें व्यक्ति बदलाव से आनंदित होता है, जोखिम प्रबंधन का अभ्यास करता है और स्वयं की गलतियों से सीखता है।
- कार्य संबंधी संस्कृति।

फ़ोकस ग्रुप का मत है कि

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की समीक्षा में पहली बार हस्तशिल्पों की धरोहर को फोकस क्षेत्र के रूप में शामिल किया जाना इस क्षेत्र की महत्ता की पहचान है।
- देश की शिक्षा प्रणाली पर आज इसके प्रभाव की समीक्षा करने का यह एक अनोखा अवसर है।
- चुनौती केवल सार्थक एवं परिवर्तनीय कार्यक्रम विकसित करने की ही नहीं है बल्कि इसके क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने की भी है।
- इसलिए अनुशंसाएँ ऐसी हों जो सरकारी विद्यालयों की स्थिति और उसके संसाधन (मानव एवं वित्तीय) के अनुरूप एवं ग्राह्य हों।
- अनुशंसाएँ ऐसी हों जो माता-पिता तथा अभिभावकों और बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सार्थक सिद्ध हों।
- बाज़ार संचालित समाज में जबतक माता-पिता को यह नहीं समझाया जाता कि पाठ्यचर्या बच्चे के पेशागत विकास को बढ़ावा देने वाली है तबतक वे इसका समर्थन नहीं करेंगे।
- मौजूदा शिक्षा प्रणाली में प्रत्येक स्तर पर सार्वजनिक असंतोष एवं मायाजाल चुनौती के साथ-साथ बदलाव लाने का अवसर भी प्रस्तुत करता है।

6. हस्तशिल्प-विशिष्ट संस्तुतियाँ

- भारतीय हस्तशिल्प और इससे जुड़े लाखों हस्तशिल्पी पारंपरिक ज्ञान एवं स्वदेशी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बहुत बड़े एवं महत्त्वपूर्ण संसाधन हैं।
- इस संसाधन का इस्तेमाल कई तरीकों से शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने में किया जा सकता है।
- हस्तशिल्प को दोनों तरह से सिखाया जा सकता है — व्यावसायिक प्रशिक्षण और रचनात्मक गतिविधियों के तौर पर और सैद्धांतिक समाज विज्ञान के रूप में।
- हस्तशिल्प को केवल अलग विषय के रूप में ही नहीं पढ़ाया जाना चाहिए बल्कि इसे इतिहास, सामाजिक एवं पर्यावरण अध्ययन, भूगोल, कला एवं अर्थशास्त्र जैसे विषयों के अध्ययन का हिस्सा भी बनाया जाना चाहिए क्योंकि यह भारतीय संस्कृति, सौंदर्य और अर्थव्यवस्था का एकीकृत हिस्सा रहा है।

- हस्तशिल्प सभी तरह की परियोजनाओं को सचित्र शिक्षण सामग्री प्रदान करते हैं और सीखने की युक्ति की तरह उपयोग में आते हैं। इस प्रकार ये इन परियोजनाओं को बेहतर बनाने की दिशा में कारगर साबित होते हैं।
- एक बच्चा कोई भी विषय या पेशा क्यों न चुनता हो, हस्तशिल्प माध्यम उसके सीखने की प्रक्रिया में सहायक साबित होता है। अपने हाथों, वस्तुओं और तकनीकों से काम करना दोनों तरीके से–समझने और समस्याओं के समाधान की दृष्टि से मदद पहुँचाते हैं।
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आई.आई.टी.) और विदेश में स्थित तकनीकी संस्थानों में मॉडल के निर्माण एवं कागज़ों को करीने से मोड़कर आकृति बनाने के तौर-तरीके का इस्तेमाल इंजीनियरिंग, गणित और भौतिकी की मूल अवधारणाओं में किया जाता है।
- शिक्षकों के अन्य कैडर को हस्तशिल्प का प्रशिक्षण देने से अच्छा है—शिल्पियों को प्रशिक्षक एवं शिक्षक के रूप में इस्तेमाल किया जाना।
- हस्तशिल्प की शिक्षा जीवन्त अनुभव प्रदान करने वाले अभ्यास के ज़रिए दी जाती है ना कि इतिहास का उद्धार करने के दिखावे के रूप में।
- हस्तशिल्प को कक्षा अभ्यास की तुलना में एक परियोजना के रूप में बेहतर तरीके से पढ़ाया जा सकता है।
- हस्तशिल्प की परियोजनाएँ एवं इससे संबंधित परिचर्चा ग्रामीण और शहरी युवकों को जोड़ने का ज़रिया हो सकती है।
- प्रशिक्षकों या महत्त्वपूर्ण संसाधन के रूप में इस्तेमाल होने वाले हस्तशिल्पियों को भी उतना ही भत्ता और वैसी ही सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए, जो दूसरे प्रशिक्षित कर्मियों को मिलती हैं।
- पहले से ही उन ग्रामीण क्षेत्रों जहाँ शिल्प का बोलबाला हो के विद्यालयों और शहरी इलाकों के विद्यालयों में हस्तशिल्प की अलग-अलग पाठ्यचर्याएँ होनी चाहिए ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में पहले से ही मौजूद हस्तशिल्प व्यवसायों (उद्यमिता, तकनीकी प्रशिक्षण, भाषा कौशल, एकाउंटेंसी, मार्केटिंग, पैकेजिंग) को और आगे बढ़ाया जा सके। शहरी क्षेत्रों में हस्तशिल्प की शिक्षा वैकल्पिक अनुभव एवं रचनात्मक निर्गम की स्थापना के नज़रिये से दी जा सके।
- हस्तशिल्प के शिक्षण में जैंडर, पर्यावरण, समुदाय, जाति आदि पहलुओं को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

6.1 इतिहास में

- निरंतरता एवं परिवर्तन का उदाहरण।
- लोगों के इतिहास का हिस्सा।
- स्वतंत्रता आंदोलन में खादी की भूमिका।
- घरों, पोशाकों, रहने/जीवन के तौर तरीके।
- ग्रीक एवं रोमन साम्राज्य के साथ कपड़ों, मानव निर्मित वस्तुओं और आभूषणों का व्यापार।
- कला संरक्षक के रूप में मंदिर एवं दरबार
- शाहजहाँ के दरबार में कारखाने।
- बाटिक एवं इकत कपड़ा हस्तशिल्प—भारत से दक्षिण पूर्व एशिया एवं वापसी में।

- नील एवं ब्रिटिश राज में नील की कहानी।
- जामावार शॉल।
- हस्तकरघा एवं औद्योगिक क्रांति।
- सिंधु घाटी सभ्यता।
- मानव निर्मित वस्तुओं के जरिए सामाजिक जीवन की व्याख्या।

6.2 भूगोल एवं पर्यावरण अध्ययन में

- स्थानीय कच्चे माल की उपलब्धता पर आधारित स्थानीय हस्तशिल्प परंपराओं का प्रादुर्भाव।
- स्थानीय सामग्रियों का इस्तेमाल।
- खनिज एवं वनस्पति रंग।
- जल-बुनाई, डाई, ब्लॉक प्रिंटिंग में इस्तेमाल।
- पत्थर, लकड़ी, बाँस एवं मिट्टी की उपलब्धता से पारंपरिक घरों का निर्माण।
- शहतूश-जातियों का संरक्षण या जीवनयापन का संरक्षण।

6.3 विज्ञान में

- ओरिगामी (कागज़ मोड़कर साज-सजावट की जापानी कला)।
- संतुलन और अनुपात।
- सामग्रियों के रासायनिक गुण।
- औज़ार एवं तकनीक।
- तपाना/पकाना एवं ढालना।

6.4 साहित्य में

- किंवदंती–विश्वकर्मा, इत्यादि।

केस स्टडी

अर्चना कुमारी की कहानी

अर्चना कुमारी उत्तर बिहार के मुज़फ्फरपुर जिले के सर्वाधिक गरीब एवं पिछड़े इलाके के एक छोटे से गाँव की रहने वाली है। चौदह वर्ष की उम्र में उसने विद्यालय की पढ़ाई-लिखाई छोड़ दी और इलाके में पारंपरिक सुजनी कढ़ाई का काम कर कुछ पैसे कमाने में जुट गई। सत्रह वर्ष की आयु में उसके रचनात्मक कौशल की जानकारी अदिति नामक एक गैर-सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.) और कनाडा के कपड़ा विशेषज्ञ डॉ. स्काई मॉरिसन को मिली, जिन्होंने संयुक्त प्रयास से उसे छात्रवृत्ति देकर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ फैशन टैक्नोलॉजी (*निफ्ट*) में प्रशिक्षण के लिए भेज दिया। अँग्रेज़ी की जानकारी नहीं होने और शैक्षणिक योग्यता में फिसड्डी रहने के बावजूद उसने अपने सत्र में सर्वश्रेष्ठ डिज़ाइन संग्रह का पुरस्कार हासिल किया और *निफ्ट* ने आगे के अध्ययन के लिए उसे चुन लिया। उसका कहना है कि वह उसकी हाथ की कारीगरी एवं शिल्प के क्षेत्र में कार्य करने के अनुभव की बदौलत ही वह अन्य बच्चों पर भारी पड़ी है। उसे इस बात का मलाल है कि उसके स्थानीय विद्यालय ने उसे या अन्य बच्चों को इस दिशा में ऐसा कोई शुरुआती आधार प्रदान नहीं किया।

"हम भी धन अर्जित कर सकते हैं लेकिन हम आज भी दूसरों पर निर्भर हैं। ऐसा इसलिए कि हममें शिक्षा की कमी और भाषा की समस्या है।" शिवा कश्यप, महिला शिल्पकार, मधुबनी (बिहार)

"मेरे बेटे के दोस्त उसकी इसलिए खिल्ली उड़ाते हैं क्योंकि वह अपनी माँ की सहायता करता है।" रिनजानी, (महिला) कसीदा शिल्पकार, इंडोनेशिया (दस्तकार, थ्रेडलाइंस वर्कशॉप 1998)

- हस्तशिल्प एवं हस्तकरघा का साहित्यिक उल्लेख।
- बुनाई एवं करघा तत्वमीमाँसक रूपक के रूप में।

6.5 कुछ परियोजनाओं एवं विद्यालयी संदर्भ में

- पोस्टर।
- नक्शे।
- विद्यालय में नाटक के मंचन के लिए मुखौटे, पोशाकें तथा मंच।
- नमूने तैयार करना।
- विद्यालयी साज-सज्जा।
- कागज़ के थैले, हस्तनिर्मित कागज़।
- स्थानीय शिल्पों एवं मानव निर्मित वस्तुओं से स्कूल का संग्रहालय विकसित करना।
- विद्यालय में डिज़ाइनों मोटिफ़्स एवं अन्य वस्तुओं का अभिलेखागार तैयार करना।

7. कैरियर एवं नियोजन

- भारत के हस्तशिल्प कौशल अनोखे एवं आज के मशीनी समाज के प्रमुख अंग हैं।
- निर्यात के क्षेत्र में हस्तशिल्प का सबसे अधिक योगदान है।
- कृषि के बाद हस्तशिल्प रोजागार का सबसे बड़ा क्षेत्र है।
- वास्तु, अभियंत्रण, डिजाइन, फ़ैशन सहित अनेक पेशों में हस्त-कौशल उपयोगी हैं।
- कैरियर से जुड़े अन्य क्षेत्रों यथा—निर्यात, संग्रहालय प्रबंधक, शिक्षण एवं गैर-सरकारी संगठन क्षेत्र में हस्तशिल्प एक महत्त्वपूर्ण प्रवेश बिंदु हो सकता है।
- विद्यालयी कैरियर (परामर्श) में इन वास्तविकताओं को उजागर किया जाना चाहिए।
- माता-पिता/शिक्षकों को इसकी वाणिज्यिक क्षमता की समझ होनी आवश्यक है।
- कैरियर के रूप में हस्तशिल्प की क्षमता, खासकर मौजूदा हस्तशिल्प परंपराओं वाले क्षेत्रों में, पर ज़ोर देना महत्त्वपूर्ण है।
- हस्तशिल्प के वर्चस्व वाले क्षेत्रों में, हस्तशिल्प पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की दक्षता को पेशेवर रूप प्रदान करने में सहायता के लिए डिजाइन, उद्यमिता, उसके प्रबंधन एवं बिक्री आदि के बारे में सिखाया जाना चाहिए।

8. जैंडर

हस्तशिल्प और जैंडर का महत्त्वपूर्ण संबंध रहा है। एक तरफ तो हस्तशिल्प परिवार और समाज के भीतर पुरुषों और महिलाओं की भूमिका का सूक्ष्म दर्शन है। पुरुष और महिलाएँ हस्तशिल्प की भिन्न-भिन्न प्रक्रियाओं में एक साथ काम करते हैं। महिलाएँ मिट्टी गूँधती हैं और पुरुष इसे चाक पर रखकर बर्तन तैयार करते हैं, महिलाएँ धागा कातती हैं और पुरुष कपड़े बुनते हैं, महिलाएँ चमड़े की जूतियों पर कसीदे काढ़ती हैं जबकि पुरुष उसे काटकर सिलते हैं। एक महिलाएँ प्रतिदिन बिना कुछ लिए अपने परिवार के भीतर ऐसी बहुत-सी भूमिकाएँ निभाती हैं।

दूसरी तरफ महिलाओं ने ऐसी अनेक हस्तशिल्प कलाओं के क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम किया है जिसे पुरुष शिल्पकारों ने छोड़ दिया है। उदाहरण के लिए, लखनऊ की चिकन इंब्रायडरी का काम अब पुरुषों ने लगभग छोड़ दिया है। अब इसे पूरी तरह महिलाएँ ही करती

हैं। इसी तरह राजस्थान के अनेक हिस्सों में ब्लॉक प्रिंटिंग का भी यही हाल हुआ है। पिछले दो दशक से अधिक समय से हस्तशिल्प गैर कुशल एवं घरेलू महिलाओं के लिए आय और रोज़गार का सफल जरिया बन चुका है। इस प्रकार यह सामाजिक सशक्तीकरण के अन्य रूपों के लिए उत्प्रेरक का काम करता है। वरिष्ठ कक्षाओं के विद्यार्थियों में इन मुद्दों एवं अवसरों की जागरूकता को हस्तशिल्प की सैद्धांतिक समझ में बुना जाना चाहिए।

> *"पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता होनी चाहिए एवं सभी प्रकार के पेशे दोनों के लिए खुले होने चाहिए। सभी पेशों का आदर करना चाहिए एवं हस्तशिल्प को एक पेशे के रूप में व्यवहार में लाया जाना चाहिए।"* मारिया गैरानितो, इम्ब्रायडर, मडेरा (दस्तकार थ्रेडलाइंस वर्कशॉप, 1998)

बाल भवन पाठ्यक्रमेतर विकल्प के रूप में हस्तशिल्प की शिक्षा प्रदान करने वाली कुछेक राष्ट्रीय संस्थाओं में से एक है। शिल्पकार द्वारा इसमें किए गए केस अध्ययन से यह पता चला कि बाल भवन की अनेक लड़कियों ने मेंहदी रचने, कृत्रिम फूल बनाने और बाँधनी के कौशल सीखकर उन्हें अपने घर-आधारित व्यवसाय के रूप में अपनाया।

9. पारिस्थितिकीय

हस्तशिल्प कुछेक पेशों में से एक है जो प्राकृतिक पर्यावरण का प्रत्यक्ष परिणाम है। आसपास की प्राकृतिक वस्तुओं—लकड़ी, धातु, मिट्टी, कपास, बेंत और बाँस, सिल्क, लाख आदि की मौजूदगी सर्वाधिक पारंपरिक हस्तशिल्पों के महत्त्वपूर्ण आधार हैं। आदमी और प्रकृति, आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संतुलन के बीच इस तरह संतुलन बनाए रखने में कृत्रिम ऊर्जा, बुनियादी संरचना या निवेश की बहुत बड़ी मात्रा की आवश्यकता नहीं होती है। इसीलिए हस्तशिल्प आज भी जीवंत है।

ऐसी दुनिया में जहाँ बाहरी संसाधनों पर निर्भरता बढ़ती जा रही है, हस्तशिल्प अनेक पाठ सिखाता है। हालाँकि हस्तशिल्प की शिक्षा इस ताकीद के साथ देनी चाहिए कि इनमें से कच्चे माल के ज़्यादातर स्रोत तेज़ी से समाप्ति की ओर अग्रसर हैं। जंगलों की कटाई हो रही है और उनके स्थान पर नये जंगल नहीं लगाए जा रहे हैं, पानी दूषित हो रहे हैं, अनेक तरह की घास एवं बेंत के पेड़ उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं, कपास के लिए मशहूर आंध्रप्रदेश के खेतों में अब तंबाकू की खेती की जाने लगी है।

- *"वह झील जहाँ से मैं इत्र के लिए खस लिया करता था अब उस जगह पर गैस की फैक्ट्री है"* सवाई माधोपुर के एक पारंपरिक परफ्यूम निर्माता के अनुसार
- *"अपशिष्ट उत्पाद की अवधारणा आधुनिक है"* टेरीकोटा हस्तशिल्पकार, तमिलनाडु
- *"पशु अपने आवास को खोजते हुए सीखना शुरु कर देते है"* माधव गाडगिल, आवास और अधिगम फोकस समूह के अध्यक्ष

हाथी दाँत, चंदन की लकड़ी तथा शहतूश पर प्रतिबंध लगाने और वन्यजीवों के संरक्षण एवं समाप्त होते प्राकृतिक संसाधनों के जीविका पर होने वाले प्रभावों जैसे मुद्दों पर कक्षा में चर्चा किए जाने की ज़रुरत है। इस दिशा में वैकल्पिक उपायों की तलाश करने के लिए शोध एवं विकास कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

10. आवश्यक औज़ार एवं बुनियादी संरचना

- मूल जानकारी देने के लिए प्रशिक्षित शिल्पियों का समूह।
- विभिन्न पृष्ठभूमि के प्रशिक्षक एवं शिक्षक जो हस्तशिल्प में रुचि रखते हों।
- विद्यालय में एक ऐसा व्यक्ति हो जो निवेशों, परियोजनाओं, बाह्य प्रशिक्षकों, हस्तशिल्प प्रदर्शनों और क्षेत्रीय दौरो का समन्वय कर सकें।
- एक ऐसी हस्तशिल्प प्रयोगशाला हो जिसमें पर्याप्त जगह और सुविधा हो तथा जहाँ कच्चा माल उपयुक्त मात्रा में हो।

11. प्रत्येक संस्थान के लिए आवश्यक संसाधन सामग्री

- देश के हस्तशिल्प का नक्शा।
- शिल्पकारों एवं हस्तशिल्प संस्थानों की क्षेत्रवार सूची।
- हस्तशिल्प पर मोनोग्राफ़।
- फिल्म और अन्य दृश्यगत सामग्रियाँ।
- विभिन्न तकनीकों, दक्षता और वस्तुओं से संबंधित मैनुअल/हैंडबुक।
- हस्तशिल्प से जुड़े लोगों के लिए विशेष मानदंड।
- समूह में कार्य करने के आवश्यक कौशल।
- शिक्षा में प्रेरणा प्रदान करने के उपाय।
- प्रौद्योगिकी और उत्पाद की पुन: शुरुआत।
- विभिन्न सरकारी एजेंसियों के बीच संबंध।

12. संसाधन

- संस्थानों को पहचानना।
- व्यक्तियों को पहचानना।
- नियमित अधिसूचना भेजना।
- प्रयोग की गई वस्तुओं की सूची तैयार करना।
- प्रामाणिकता सुनिश्चित करना।
- हस्तशिल्पों को सूचीबद्ध करना।
- डिजाइन एवं मोटिफ़्स की सूची बनाना।
- शिल्पकारों के मौखिक इतिहास को संकलित करना।
- मोटिफ़्स और डिज़ाइनों की स्थानीय संसाधन पुस्तक तैयार करना (उदाहरण के लिए कोलम, मंडना, बुनना और कढ़ाई के मोटिफ़्स)।
- मोटिफ़्स और डिजाइनों के अर्थ और महत्त्व की व्याख्या (उदाहरण के लिए—अल्पना) स्वयं का संसाधन (स्कूल में कक्षा-कक्ष परियोजनाओं के हिस्से के रूप में विकसित)।

13. प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण

इस बात पर सहमति है कि प्रशिक्षकों का चुनाव महत्त्वपूर्ण पहलू है। सही प्रोत्साहन एवं प्रश्रय के बिना यह परियोजना असफल हो सकती है। हर कोई कला शिक्षकों की भयानक कहानियों से अवगत है जिसमें प्रतिभावान एवं रचनात्मक क्षमता वाले विद्यार्थियों के हितों का भी गला घोंट दिया जाता है।

सर्वप्रथम उपयुक्त प्रशिक्षकों/शिक्षकों की पहचान किए बिना और उन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण दिए बगैर क्राफ्ट स्टडीज (हस्तशिल्प अध्ययन) नामक नये पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक शुरु नहीं किया जा सकता है। इस योजना को पहले कुछ विद्यालयों में प्रयोग के तौर पर शुरु किया जाना चाहिए और फिर बाद में उसे सुधार कर अमल में लाना चाहिए।

प्रशिक्षण मॉड्यूल के रूप में नियोजित एवं विकसित किए जाने की आवश्यकता वाले क्षेत्र

- प्रशिक्षण के लिए आवश्यक घटक पहचानना।
- कैरियर विकल्प पहचानना।
- संसाधन सामग्रियों तथा औज़ारों (शिक्षा की दृष्टि से आवश्यक) की सूची बनाना।
- पर्याप्त अनुभव सुनिश्चित करना।
- हस्तशिल्प से संबंधित घटकों की पहचान करना
- संसाधनयुक्त संस्थाओं और व्यक्तियों के बीच नेटवर्किंग।

14. मूल्याँकन

फोकस ग्रुप इस बात पर एकमत है कि कोई औपचारिक परीक्षा या अँक देने की व्यवस्था नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इस क्षेत्र में सफलता और असफलता वंशानुगत दक्षता एवं बच्चों को मिलने वाली प्रेरणा तथा शिक्षक की वस्तुपरक मूल्य प्रणाली पर आंशिक रूप से निर्भर करती थी। लेकिन नियमित मूल्याँकन का कोई प्रारूप अख्तियार करना चाहिए जो शिक्षक और पाठ्यक्रम दोनों के लिए स्व-मूल्याँकन भी होगा। इन बातों का भी मूल्याँकन किया जाना चाहिए कि बच्चे ने कैसा प्रयास किया, उसकी रुचि कैसी थी और उसने चीजों को कैसे निपटाया।

इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है — बच्चों का अनुभव स्तर और उनकी दक्षता एवं रचनात्मकता बढ़ाना। जैसा कि पुलक दत्ता ने कहा है, *'जब बच्चे पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी जाती है तो उसकी खुशी छिन जाती है।'* एक ऐसा प्रारूप एवं ऐसी प्रणाली होनी चाहिए जो पूरी तरह कठोर न हो।

15. कला एवं हस्तशिल्प

फोकस ग्रुप ने अनुशंसा की है कि इन दोनों विषयों को अलग-अलग करने की अपेक्षा इन्हें एक साथ मिला देना चाहिए और भारतीय हस्तशिल्प कौशल एवं वस्तुओं का इस्तेमाल रेखाचित्र और पेंटिंग आदि के साथ-साथ बच्चों की रचनात्मकता एवं कलात्मकता विकसित करने में किया जाना चाहिए। डिज़ाइन एक ऐसा महत्त्वपूर्ण घटक है जिसे दोनों विषयों में शामिल किया जाना चाहिए साथ ही विद्यार्थी हस्तशिल्प तकनीक का इस्तेमाल विद्यालय-पर्यावरण, कक्षाओं और पोशाकों की डिज़ाइन के लिए कर सकते हैं।

16. प्रश्न एवं सरोकार

हस्तशिल्प शिक्षा किस तरह विभिन्न क्षेत्रों एवं विभिन्न सामाजिक समूहों की अपेक्षा और संदर्भों पर खरी उतरेगी? क्या हाशिए पर पहुँच चुके लोगों की आवाज़ को जगह देने के मुद्दे पर इसका रुख लचीला होगा? इससे विविधता और समानता के मुद्दों से कैसे निपटा जाएगा?

17. पाठ्यचर्या समीक्षा के लिए चर्चा समूह

- हस्तशिल्प के परिप्रेक्ष्य में धरोहर के घटक क्या हैं?
- क्या **'धरोहर'** शब्द युवाओं तक यह गलत संदेश पहुँचाता है कि यह *'मृतप्राय इतिहास'* का उद्धार मात्र है।
- विभिन्न सामाजिक परिवेशों (ग्रामीण/शहरी) में हस्तशिल्प का क्या अर्थ है?

- क्या हस्तशिल्पों की धरोहर के अध्ययन को पारंपरिक भारतीय शिल्पों तक ही सीमित रखना चाहिए या इसे समकालीन एवं गैर स्वदेशी तकनीकों तक भी बढ़ाया जाना चाहिए?
- कोई कैसे हस्तशिल्प अध्ययन को शहरी युवाओं के लिए प्रासंगिक एवं उत्साहवर्द्धक बना सकता है?
- हस्तशिल्प के क्षेत्र में किए गए योगदानों का व्यावहारिक अनुभव कैसे पाठ्यपुस्तकों और मैनुअल में समाहित किया जा सकता है?
- नयी पाठ्यचर्या को संचालित करने वाली क्रियान्वयन एजेंसी की भूमिका और रूप क्या होगा?
- शिक्षकों की गुणवत्ता कैसे निर्धारित की जाएगी?
- पाठ्यचर्या में हस्तशिल्प शिक्षा की जगह कैसे बनाई जाएगी?
- संसाधनों का अभाव जैसे—सामग्रियों एवं उपकरणों का क्रय मूल्य, इनसे कैसे निपटा जाएगा?
- नौकरशाहों एवं स्थानीय प्रशासन को हस्तशिल्प शिक्षा के प्रति कैसे संवदेनशील बनाया जाएगा?
- हस्तशिल्प को राजनीतिक-सांस्कृतिक कारणों से गुमराह नहीं किया जाना चाहिए।
- हस्तशिल्प को सफलता नहीं हासिल कर सकने वालों के लिए दूसरी श्रेणी का विकल्प नहीं बनने देना चाहिए।

18. हम कहाँ से आये हैं? हम क्या हैं? हम कहाँ जा रहे हैं?

पॉल गॉग्विन

- बाल भवन के दस्तकार कैसे अध्ययन के परिणामों और विद्यालयों के हस्तशिल्प संग्रहालय के भ्रमण से इस तथ्य को बल मिलता है कि हस्तशिल्प को स्कूल की शिक्षा का हिस्सा बना देना चाहिए। हस्तशिल्प के जरिए सीखना आसान हो जाता है और इसका इस्तेमाल इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गणित आदि जैसे विषयों की शिक्षा प्रदान करने में किया जा सकता है।
- बच्चे हस्तशिल्प के ज़रिए अपनी सांस्कृतिक विरासत का अनुभव कर सकते हैं।
- हस्तशिल्प आधारित प्रशिक्षण व्यावसायिक हो सकते हैं और उत्तरवर्ती जीवन में इनका इस्तेमाल जीविका अर्जित करने में किया जा सकता है।
- हस्तशिल्प बच्चों को ऐसे रास्ते प्रदान करता है जिसमें वे शब्दों की ज़रुरत महसूस किए बिना और सज़ा के डर के बिना अपने आपको अभिव्यक्त कर सकते हैं।
- हस्तशिल्प बच्चों की वंशानुगत रचनात्मकता को बाहर लाता है। खासकर यदि उन्हें इस बात के लिए मुक्त कर दिया जाए कि वे क्या और कब सीखना चाहते हैं।
- रचनात्मक प्रतिभा को निखारना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालयों में मुख्य रूप से अकादमिक अवयवों पर ध्यान दिया जाता है। यदि कोई बच्चा गणित में अच्छा नहीं कर रहा है तो उसे असफलता का अहसास करने के लिए छोड़ने के बजाय अन्य क्षेत्रों में लगाया जाना चाहिए।
- गैर औपचारिक विधि अख्तियार करने के कारण बाल भवन में सीखना एक आनंदमयी अहसास है। यदि हस्तशिल्प को नियमित

पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है तो इस बात को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।

- पारंपरिक हस्तशिल्पकारों को इन विद्यालयों में शिक्षण के कार्य में लगाने से न केवल उन्हें रोज़गार मिल जाएगा बल्कि इससे यह भी सुनिश्चित होगा कि हस्तशिल्प का अध्यापन देश की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के लिहाज से सही है। उदाहरण के लिए, वे क्रॉस स्टिच इंब्रायडरी के लाभों को बढ़ा-चढ़ाकर व्यक्त करने के बजाय मधुबनी पेंटिंग के बारे में बता सकते हैं।
- बच्चों को पारंपरिक हस्तशिल्प की शिक्षा प्रदान करने से यह सुनिश्चित हो जाएगा कि ये परंपराएँ समाप्त नहीं होंगी। एक अध्यापक ने कहा है—

  "ऐसा वक्त नहीं आने देना चाहिए कि विदेशी लोग भारत आकर हमारी ही हस्तशिल्प कला के बारे में हमें पढ़ाएँ"।

19. क्रियान्वयन से जुड़े विचार

- सभी विद्यालयों में हस्तशिल्प प्रयोगशालाएँ स्थापित करना।
- जूनियर एवं मिडिल विद्यालयों में हस्तशिल्प को अनिवार्य करना एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में (खासकर विकसित हस्तशिल्प कला वाले क्षेत्रों में) इसे प्रमुख ऐच्छिक विषय के रूप में रखना।
- बच्चों को स्थानीय इतिहास, भौगोलिक स्थितियों, रीति-रिवाजों, पुष्पों और वनस्पतियों, कपड़ों और पोशाकों और संस्कारों से संबंधी पुरातात्विक हस्तशिल्प बनाने की स्थानीय हस्तशिल्प संग्रहालय से संबद्ध परियोजनाओं पर काम करना चाहिए।
- वार्षिक मेलों का आयोजन किया जाना चाहिए जिनमें बच्चों द्वारा विकसित एवं तैयार उत्पादों को बेचने की व्यवस्था हो।
- हस्तशिल्प की दृष्टि से विकसित इलाकों में अवकाश के दिनों में शिविर लगाने की व्यवस्था हो जहाँ हस्तशिल्पकारों के साथ काम का अवसर मिल सके।
- हस्तशिल्पकारों (विशेषकर उस अवस्था में जहाँ वे विद्यालय के बच्चों के अभिभावक हों) द्वारा व्याख्यान और प्रदर्शन दिए जाएँ।
- अनुदेशन के माध्यम के रूप में पुतलियों का इस्तेमाल।
- हस्तशिल्पकार बच्चे जो पढ़ा सकते हों उनके साथ शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के बीच अनुभवों का आदान-प्रदान हो तथा बच्चों को एक दूसरे के इलाकों में भी ले जाया जाए।

हस्तशिल्पकारों के प्रति आदर भाव एवं दस्तकारी कला तथा कौशलों के प्रति प्रशंसा की भावना का विकास करना इन अनुशंसाओं का मुख्य उद्देश्य है। हमारी संबद्ध जानकारी के अनुसार अद्भुत और समृद्ध हस्तशिल्प परंपराएँ एवं कुशल तथा प्रतिभाशाली हस्तशिल्पकार भारत की बेजोड़ पूँजी हैं जिसको उस संसार में अपनी पहचान की तलाश है जो ज़्यादा एकरूप और प्रौद्योगिक होता जा रहा है।